शोध संचयन
A Refereed Research Journal
And a complete Periodical dedicated to
Humanities & Social Science Research
ISSN 0975 1254 (PRINT)
ISSN 2249-9180 (ONLINE)
www.shodh.net
Vol. 13
Issue 1&2
15 July 2022

नाथ साहित्य का ऐतिहासिक विवेचन एवं आदिकालीन नाथ सम्प्रदाय का उद्भव

बीज शब्द :

नाथ साहित्य अपनी मौलिक क्षमता के कारण महत्वपूर्ण है। गोरखनाथ के साथ नाथ साहित्य के विकास में विकास में प्राय: सभी कवियों ने अपनी रचनाओं में गोरखनाथ प्रवृत्त भावों का अंकुरण किया है, इनकी रहस्यपरक अनुभूतियों में तत्कालीन जनजीवन की सहज छाप मिलती हैं। साहित्य का प्रभाव नाथ-साहित्य सन्त सम्प्रदाय आदि की धार्मिक रचनाओं पर पड़ा इस दृष्टि से साहित्येतिहास की यह अत्यन्त महत्वपूर्ण कड़ी है। नाथ सम्प्रदाय के उदयकाल एवं विकासशील सीमा के निर्धारण में हिन्दी के विद्वान एकमत नहीं हैं। कुछ विद्वानों की मान्यता है कि नाथ मत का विकास किसी पूर्ववर्ती सम्प्रदाय से न होकर स्वतंत्ररुप से हुआ है। लेकिन यह बात किसी ठोस आधार पर आधारित नहीं है। क्योकि संकटपूर्ण हो जाता है जब उसमें मौलिकता नही रहती है। नाथ मत के साथ कोई ऐसी बात घटित नही हुई है। उसने अपनी पूर्ववर्ती परम्परा को परिष्कृत-परिमार्जित कर नवीन मूल्य प्रदान किया।

*****

विवेक कुमार तिवारी
शोध छात्र
इलाहाबाद विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, प्रयागराज (उ0प्र0)
डॉ० योगेन्द्र प्रताप सिंह
प्रोफसर
इलाहाबाद विश्वविद्यालय हिन्दी विभाग, प्रयागराज (उ0प्र0)

नाथ साहित्य का ऐतिहासिक विवेचन एवं आदिकालीन नाथ सम्प्रदाय का उद्‌भव

नाथ साहित्य हिन्दी वाड्‌मय में ही उपस्थित ना होकर संपूर्ण भारतीय वाड्‌मय में मौलिकता के साथ उपस्थित है। वस्तुनिष्ठत: शिव उपासक जो नाथ संप्रदाय से संबधित है उनके द्वारा जो साहित्य रचा गया वही नाथ साहित्य कहलाया। नाथ साहित्य की रहस्यात्मक अनुभूति सहज रुप से भारत के लोकजीवन में सहजता के साथ परिलक्षित हो जाता हैं।

नाथ सम्प्रदाय का उदय

नाथ सम्प्रदाय के प्रर्वतक एवं कालनिर्धारण सम्बन्धी अवधारण पर भी हिन्दी के आलोचकों में मतभेद हैं। सामान्यत: इस पंथ के संचालक मत्स्येन्द्रनाथ (मछन्दरनाथ) तथा गोरखनाथ माने जाते हैं। साहित्य की प्राचीन परम्परा के अनुशीलन से यह स्पष्ट है कि नाथ सम्प्रदाय की मूलभूत प्रवृत्तियाँ शिव-शक्ति अर्थात शैव सम्प्रदाय के सिद्धान्तों से संयुक्त थी। कुछ विद्वानों के मतानुसार गुरु गोरखनाथ इस सम्प्रदाय के प्रर्वतक हैं। वस्तुत: एक ही भूभाग में शैव एवं बौद्ध तंत्र साधनाएं कई शताब्दियों तक समानान्तर गति से विकसित हुई। अत: समानुपातिक रूप से कुछ सिद्धान्तों का घुल-मिल जाना नितान्त स्वाभाविक है। जहाँ तक नाथ मत के प्रर्वतक का प्रश्न है। **इस संबध में ज्ञातव्य है कि सीधे-सीधे किसी घटना हुआ और न ही इस सम्प्रदाय के प्रर्वतक माने जाने वाले गुरू गोरखनाथ स्वयंभू रूप में धरा पर अवर्तीण हुए।**

गोरखनाथ के जन्मकाल, स्थान, जाति आदि के संबध में भी मतभेद हैं। किसी निश्चित तिथि का निर्देश विवादग्रस्त है। नाथपंथियों की अनेक परम्पराएँ प्रचलित थी। जिस तरह सिद्ध साहित्य के निर्माता चौरासी सिद्ध माने जाते हैं उसी तरह नाथ-साहित्य के निर्माता नव नाथ माने गये है। इन नव-नाथों को चौरासी सिद्धो के अर्न्तगत भी गिना जाता है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार बौद्ध धर्म विकृत होकर वज्रयान सम्प्रदाय के रूप में देश के पूर्वी भागों में बहुत दिनों से चला आ रहा था। इन बौद्ध तांत्रिकों के बीच वामाचार अपनी चरम सीमा तक पहुँचा। ये बिहार से लेकर आसाम तक फैल थे और सिद्ध कहलाते थे। चौरासी सिद्ध इन्हीं में हुए हैं जिनका परम्परागत स्मरण जनता को अब तक है। नवनाथ बज्रनाथ शाखा के आचार्य माने जाते हैं। इससे यह ज्ञात होता है कि प्रारम्भ में नाथों का सम्बन्ध बौद्ध सिद्धों से किसी न किसी रूप में रहा होगा। जो बाद में योग मार्ग का अपनाकर एक नवीन विचाराधारा के रूप में प्रकट हुए। इस सम्प्रदाय के आदिनाथ 'शिव माने जाते हैं। जनश्रुति के अनुसार मत्स्येन्द्रनाथ की भोग विलासीमयी प्रवृत्तियों का गोरखनाथ ने घोर विरोध किया। यह विरोध दो भिन्न सिद्धान्तों को रेखांकित करता।

गोरखनाथ के जन्मस्थान के संबध में भी कम मतभेद नहीं है। भौगोलिक स्थिति के आधार पर नाथ सम्प्रदाय की साहित्यिक पृष्ठभूमि को उजागर करने में इस प्रश्न का समाधान महत्वपूर्ण होगा। गोरखनाथ के जन्मस्थान एवं उनकी जीवन परिस्थितियों के संबध में कई तरह की दन्त कथाएँ प्रचलित हैं। कुछ विद्वानों का अनुमान है कि इनका जन्म हिमालय क्षेत्र के आस-पास हुआ होगा। इनके पक्षधरों का तर्क है वहाँ बौद्ध मत के साथ-साथ शिव पूजा भी प्रचलित रही हैं। क्योकि पंजाब के उत्तरी हिमालय भाग में कनफटे योगी मिलते हैं। जो शिव का पूजन करते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का भी अभिमत इस तथ्य को पुष्ट करता है। मूलत: राजस्थान एवं पंजाब को स्वीकारते हैं। नाथपंथ के जोगी कान की लौ में बड़े-बड़े छेद करके कनफटे नाथ के नाम से जाना जाता है। इनका पैतृक कार्य भिक्षाटन भी माना गया है। यह योगी महात्मा के रूप में भ्रमण कर अपनी गोरखवाणी से समाज को उपदेशित करते थे। इनके जीवन व्रत में इसका भी उल्लेख मिलता है कि यह योगी जूते, चप्पलों को पहनने के लिए प्रयोग नही करते थे। अपने नियमों के प्रति इनकी हठधार्मिता होती थी। इनके सम्प्रदाय में किसी व्यक्ति की मृत्यु होने पर उसे जलाया नही जाता था बल्कि उस व्यक्ति की अर्थी का सजाकर एवं मृत शरीर को पालकी में बिठा कर उसे उसी रूप में कब्र खोदकर कब्र में दफनाया जाता हैं। जिसे इनकी नाथ सिद्ध योगी समाधि के रूप में जाना जाता है। नाथपंथ के उपदेषों का प्रभाव हिन्दुओं के अतिरिक्त मुसलमानों पर भी प्रारम्भ में ही सही, नाथपंथ में आए। अब भी बहुत से मुसलमान जोगी गेरूआ वस्त्र पहने, गुदडी की लम्बी झोली लटकाए, सारंगी बाजा बजाकर 'कलि में अमर राजा भर्तहरि' के गीत गाते फिरते हैं और पूछने पर गोरखनाथ को अपना आदि गुरू बताते है।

''नाथ-साहित्य'' का उद्‌भव एवं विकास

गोरखनाथ नाथ-साहित्य के आरम्भकर्ता माने जाते हैं। वे सिद्धों के मार्ग का विरोध किया था। गोरखपंथी साहित्य के अनुसार आदिनाथ स्वयं शिव थे। उनके पश्चात मत्स्येन्द्रनाथ हुए, नाथ सम्प्रदाय एवं गोरखनाथ के साहित्य की मूलभूत विशेषताऐं स्पष्टत: हठयोग साधना, आध्यात्मिक चितंन, तांत्रिक चमत्कार एवं शिव-शक्ति की उद्‌भावना है। इस सम्प्रदाय ने बौद्ध-तांत्रिक वामाचार का घोर विरोध किया और सघन पक्ष पर बल देकर

तांत्रिक सिद्धान्तों का बहिष्कार किया। दो परम्पराओं के बीच का सिद्व सम्प्रदाय एक नये संगठन के रूप में उभरा होगा।

गोरखनाथ के अद्भूत प्रतिभा एवं चतुर्दिक प्रभाव को देखकर विद्वानों ने ऐसा अनुमान लगाया है कि वाममार्गी शाक्त, बौद्ध, अघोर, जैन-तांत्रिक आदि सम्प्रदाय नाथ सम्प्रदाय में लीन हो गये होंगे। कण्हपा की पद्धति से यह ज्ञात होता है कि बहुमात्रा में बौद्ध धर्म का त्याग कर शैव एवं नाथ सम्प्रदाय में दीक्षित हो गये। गोरखनाथ के अनेक शिष्यों की गणना विद्वानों में की है। आदिकालीन हिन्दी साहित्य की उपलब्ध साहित्यिक सामाग्रियों के प्रमाणिकता निर्विवाद नही है। विभिन्न विद्वानों द्वारा सम्पादित गोरखबानी ग्रंथ में इसकी प्राचीन भाषा का रूप भिन्न-भिन्न मिलता है। समय समयान्तर पर नाथ सम्प्रदाय के प्रभाव में तत्युगीन प्रचलित कई सम्प्रदाय अन्तर्भूत हुए हैं। नाथ-साहित्य का वर्ण्य विषय मूलतः दो धाराओं है दर्शन एवं व्यवहार भावना की पृष्ठभूमि पर ईश्वर की चिन्तन को नाथपंथियों ने शून्यवाद के रूप में ग्रहण किया है। नाथों के अनुसार वैराग्य से ही मनुष्य को मुक्ति मिलती है। इस वैराग्य के लिए गुरू को इन्होंने सर्वोच्च स्थान दिया है। ये साधन में नारी को सबसे अधिक बाधक मानकर उसका निषेध करते हैं। गोरखनाथ ने अपना शिष्यों को नारी से सदा दूर रहने का आदेश दिया। कबीर में नारी विरोध का जो स्वर मिलता है उसे भी इसी प्रतिक्रिया का परिणाम समझना चाहिए। नाथपंथियों का दूसरा प्रमुख सिद्धान्त व्यवहारिकरूप से हठयोग की साधना है। जिस तरह वज्रयानियों ने शून्य को ही विश्व का मूल तत्व माना उसी तरह नाथपंथियों ने अलखनिरंजन को मूल तत्व माना। पारिभाषिक दृष्टि से दोनों तथ्य समानान्तर है।

किन्तु क्रियात्मक दृष्टि से नाथ-सम्प्रदाय उसे एक विशिष्ट अर्थ गौरव प्रदान करता है। गोरखनाथ ने ब्रम्ह की कल्पना इन्द्रीय निग्रह एवं साधना की ठोस भूमि पर की है। वे अधैत को केवल ज्ञान का विषय नही मानते थे। ब्रम्ह अगम है, अगोचर है, उसकी कोई बस्ती नही है, वह शून्य भी नही है। हम नही कह सकते है कि वह कुछ है और भी नही कह सकते है कि ये कुछ भी नही है। गोरखनाथ के अनुसार वह भाव-अभाव सत्य-असत्य दोनों से परे है। सिद्वो की वाममार्गी भोग प्रधान योग साधना की प्रतिक्रिया के रूप में आदिकाल में नाथपंथियों की हठयोग साधना आरम्भ हुई। राहुल जी ने नाथ पंथ को सिद्धों की परम्परा का ही विकसित रूप माना है। इस पंथ को चलाने वाले मत्स्येन्द्र नाथ (मछन्दरनाथ) तथा गोरखनाथ से पहले अनेक सम्प्रदाय थे, जिन सब का उनके नाथ पंथ में विलय हो गया था। शैवों एवं शाक्तों के अतिरिक्त बौद्ध, जैन तथा वैष्णव योगमार्ग भी उनके सम्प्रदाय में आ मिले थे। गोरखनाथ ने अपनी रचनाओं में गुरू महिमा, इन्द्रिय निग्रह, प्राण-साधना, वैराग्य मनः साधना, कुण्डलिनी जागरण, शून्य समाधि आदि का वर्णन किया है। इन विषयों में नीति और साधना की व्यापकता मिलती है। इसी साहित्य का विकास भक्तिकाल में ज्ञानमार्गी सन्त काव्य के रूप में हुआ। अतः नाथ साहित्य की साहित्यिकता को स्वीकार करना ही अधिक न्याय संगत है।

वर्तमान नाथ संप्रदाय एवं निवास का विवरण

भारतीय समाज पुरूष प्रधान समाज रहा है। इस समाज में स्त्रियों की स्थिति हमेशा दासों जैसी रही है। समाज का एक महत्वपूर्ण अंग होने के बावजूद भी स्त्री को कभी भी समाज के मुख्य अंग के रूप में स्वीकार नही किया गया है। प्रकृति ने जीवन व्यवस्था में दो तत्वों को महत्वपूर्ण रूप दिया एक स्त्री और दूसरा पुरूष, समाज के विकास में दोनों ही पक्षों ने अपना-अपना भरपूर सहयोग दिया। कोई भी पक्ष दूसरे पक्ष की तुलना में न तो अधिक ऊँचा और न ही नीचा, लेकिन तो फिर भी सामाजिक मान्यताओं ने स्त्री को तो पुरूष के बराबर का हक नही दिया। समाज ने एक ओर तो पुरूष को सर्वोच्चता के शिखर पर प्रतिष्ठित कर, भारतीय समाज को पुरूष प्रधान समाज ही बना दिया और स्त्री को निचले तब के का प्राणी घोषित कर दिया। गोरखनाथ के गुरू मछन्दरनाथ पूर्णतः नारी भोग में संलिप्त थे। जिसका गोरखनाथ के द्वारा विरोध किया गया

इसीलिए नाथ साहित्य में नाथ पंथी योगियों को नारी से पूर्णतः दूर रहने का नियम व्रत था। नाथ पंथी सिद्ध गण नारी भोग पर विश्वास नही करते थे। वर्तमान नाथ सम्प्रदाय गुरू गोरखनाथ के वंश एवं सम्प्रदाय से फलीभूत एक नवीन सम्प्रदाय है जिसमें पौराणिक समय से लेकर वर्तमान तक काफी परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। यह वर्तमान तक काफी परिवर्तन नाथ सम्प्रदाय से आधुनिकता की चका चौंध के द्वारा हुआ है और आज समाज का हर व्यक्ति भौतिकवादी नवीन धारा में बह चुका है। वर्तमान में भी नाथ सम्प्रदाय के कुछ लोग अपनी पौराणिक समय से चली आ रही रीति का बखूबी से पालन कर रहे है लेकिन उन लोगों के सामने भी वर्तमान सामाजिक परिवेश बाधा बना हुआ है। नाथ सम्प्रदाय के लोग भारद्वाज गोत्र के माने जाते है। भारत भूमि आदिकाल से ही सांस्कृतिक चेतना की अखण्ड परम्परा में पलती रही है। ऐतिहासिक उथल-पुथल एवं अनेकानेक धार्मिक, राजनैतिक और सामाजिक आघातों प्रत्याघातों के बावजूद किसी न

किसी रूप में यह पराम्परा अक्षत बनी रही। इस परम्परा की एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण कड़ी नाथ पंथी साधना है। नाथ मत के सबल प्रचारक एवं प्रर्वतक गोरखनाथ ने पूर्ववर्ती सम्प्रदाय द्वारा विरवदित इस परम्परा को एक सार्थक आयाम दिया जो देश-विदेश की राजनैतिक महाशक्तियों के मध्य निरन्तर पिसती भारतीय जनता की मनोवृत्ति के अनुकूल सिद्ध हुई। नाथ पंथियों की हठयोग साधना से भारतीय आध्यत्मिक चिंतन परिपुष्ट हुई। इस चिंतन की उत्स भूमि सिद्व पंथी वामाचारों की प्रतिक्रिया में उभरी थी। जो परवर्ती साहित्य एवं भारतीय सांस्कृतिक चेतना को बहुत गहराई में प्रभावित करती रही है। हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल की प्रत्येक धड़कन पर नाथ साहित्य की अमिट छाप परिलक्षित होती है।

नाथ साहित्य का स्वरूप उपदेशात्मक या धार्मिक है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल एवं अन्य विद्वान इसी कारण इसे हिन्दी साहित्य की अनेकशः कलात्मक विद्याओं में तद्युगीन जीवन और जगत की पूरी छाप इस साहित्य में मिलती है। लोक भावना एवं समष्टि गल चिंतन का पक्ष जीवन मूल्य को पूर्णतः उकेरता है। अतः लोक जीवन और चितवृत्तियों का यह साहित्य हिन्दी संसार के लिए एक सार्थक उपलब्धि है।

सन्दर्भ संकेतः-

1. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल- हिन्दी साहित्य का इतिहास डॉ0 रामस्वरूप चतुर्वेदी-लोक भारती प्रकाशन इलाहाबाद
2. हिन्दी साहित्य का आदिकाल (हिन्दी साहित्य का आदिकाल वीसलदेव रासो)

(1) डॉ0 पीताम्बर दत्त बडथ्वाल
(2) हर प्रसाद शास्त्री
(3) डॉ0 धर्मवीर भारती
(4) पं0 हजारी प्रसाद द्विवेदी
(5) राहुल सांकृत्यायन
(6) डॉ0 मोहन सिंह
(7) डॉ0 भगीरथ मिश्र
(8) राम बिहारी शुक्ल
(9) मिस्टर ब्रिग्ज
(10)एस0 के0 चटर्जी

3. डॉ0 नागेन्द्र नाथ उपाध्याय पूर्व आचार्य हिन्दी विभाग हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी
4. डॉ0 नागेन्द्र- हिन्दी साहित्य का इतिहास- डॉ0 सुरेशचन्द्र गुप्त हिन्दी संसार के लिए एक सार्थक उपलब्धि है।
5. गढ़वाल का इतिहास- हरिकृष्ण रमूडी सम्पादक डॉ0 यशवन्त सिंह कठोच भागीरथी प्रकाशन गृह बस अड्डा बौराडी नई टिहरी, उत्तराखण्ड
6. प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य डॉ0 गंगा सहाय 'प्रेमी हरीश प्रकाशन मंदिर अस्पताल मार्ग आगरा-282003 उत्तर प्रदेश

◆◆◆

(पृष्ठ 40 का शेष)पाश्चात्य गणितविज्ञाने संस्कृत वाङ्कमयस्य प्रभावः.....

33. (Boyer 1991, "The Arabic Hegemony" p. 230) 'ऊपर दिए गए समीकरणों के छह मामले धानात्मक मूल से युद्र रैखिक और द्विघात समीकरण
34. ` के लिए सभी संभावनाओं को खत्म करते हैं। अतः अल ख्वारिज्मी की प्रदर्शनी इतनी व्यवस्थित और सम्पूर्ण थी उनके पाठकों को हल सीखने में बहुत कम मुश्किल का सामना करना पड़ता है।
35. गांदज और सालोमन 1936,अल-ख्वारिज्मी की बीज गणित के स्रोत, ओसिरिस आई, पी पी. 26-77 'एक अर्थ में, ख्वारिज्मी को मुख्यतः 'बीज गणित का जनक'कहा जाता है, डायाफेंटस को यह उपाधि नहीं दी जाती है क्योंकि ख्वारिज्मी पहले ऐसे व्यद्रि थे जिन्होंने सबसे पहले एक मूल रूप में बीजगणित सिखाई, जबकि डायफेंटस संख्याओं के सिद्वांत से सम्बंधित हैं।'
36. (Boyer 1991, "The Arabic Hegemony" च. 229) 'यह सुनिश्चित नहीं है कि अल-जब्र और मुकाबालाह शब्दों का क्या अर्थ है, लेकिन सामान्य व्याख्या ऊपर दिए गए अनुवाद में निहित व्याख्या से समानता रखती है। शब्द अल -जब्र का संभावी अर्थ 'पुनः संचय ष्और 'पूर्णता' से है और यह समीकरण के दूसरी और से घटाए गए पदों के स्थानान्तरण का उल्लेख करता

◆◆◆